एस० एल० कॉलेज जहानाबाद
हिन्दी विभाग
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
शिक्षण - पार्ट एक
समय - 11.30 to 12.45, 27.5.2020
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - चन्द्रगुप्त नाटक के पात्र

छात्र - छात्राओं !

जैसा कि उपर्युक्त नाटक की कथावस्तु पर विचार करते समय हमलोगों ने देखा था कि इस नाटक में पात्रों की भीड़ है कथानक विस्तार के कारण ऐसा हुआ पर, ये पात्र नाटकोचित इतिवृत्तों के निर्वहन में अपेक्षित सफल सिद्ध हुए हैं। इस नाटक में पुरुष पात्रों की संख्या 18 (अठारह) है तो स्त्री पात्रों की 8 (आठ) है। कुल 26 पात्रों के परिचय एवं अन्तर्संबंधों को समझना और याद रखना सामान्य दर्शक वर्ग के लिए अत्यन्त कठिन है। प्रायः मुख्य पात्रों को ही लोग याद रखते हुए ग्रहण कर पाते हैं। यह इस नाटक का वैशिष्ट्य है कि इसके कई प्रधान-पात्र हैं। जो नायक की तरह ही नायकों के गुणों से युक्त हैं जिनसे नायक के चारित्रिक विकास में मदद मिलती है जैसे : — चन्द्रगुप्त, चाणक्य, सिंहरण, पर्वतेश्वर आदि। परन्तु इन्हीं पात्रों की वीरता, योग्यता, कुलीनता, तथा अन्य नाटकोचित गुणों से युक्त होने के कारण विडम्बना भी उत्पन्न होती है। इसीलिए जरूरी नहीं होने पर भी हमेशा यह प्रश्न उठता रहा है कि इस नाटक का नायक कौन है? चाणक्य, चन्द्रगुप्त या सिंहरण। विश्वविद्यालयीय परीक्षाओं में लगातार प्रश्न वर्षों से विद्यार्थियों से पूछा जाता है कि चंद्रगुप्त

नाटक का नायक कौन है? — 'चन्द्रगुप्त-चाणक्य या सिंहरण। वस्तुत: इसके दो कारण हैं — चाणक्य भी चन्द्रगुप्त के समान ही इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्ति है और नाटक में उसका योगदान चंद्रगुप्त से कम नहीं है बल्कि अधिक ही है। दूसरे नाटक के प्रारम्भ से लेकर अंत तक दोनों का प्राय: सभी प्रमुख घटनाओं और स्थितियों में योग बना रहता है। स्वीकार नाटक का लक्ष्य तय करने में तथा उस लक्ष्य की सिद्धि के उपायों तथा नाटक के समस्त उसके निमित्त कार्य-व्यापारों में उपर्युक्त तीनों पात्रों का लगभग बराबर का योगदान बना रहता है।

चारित्रिक दृष्टि से भी तीनों पात्रों में कोई कमी नहीं दीखती है। जितनी व्यापकता के साथ चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व शील, और चारित्रिक निर्मलता के उद्घाटन का प्रयास नाटककार ने किया है उतनी ही व्यापकता के साथ चाणक्य का भी चरित्र उद्घाटित हुआ। इसी प्रकार जिस तरह की वीरता, दृढ़ विश्वास, चारित्रिक निर्मलता चन्द्रगुप्त में चित्रित की गई है उसी तरह की वीरता, दृढ़ता और चारित्रिक निर्मलता का विकास सिंहरण के चरित्र में भी दिखलाया गया है। यह अलग बात है कि नाटक का नायक किसे माना जाय इसके लिए नाटककार ने प्राचीन भारतीय मान्यता को ही स्वीकार करते हुए — फल के उपभोक्ता यानी लक्ष्य की सिद्धि के उपरांत फल प्राप्ति का उपभोक्ता चूंकि चन्द्रगुप्त होता है इसलिए चन्द्रगुप्त को नायक स्वीकार किया जाता है।

लक्ष्य सिद्धि - (सिकन्दर एवं सिल्युकस से भारत का मुकाबला) में चाणक्य प्रेरक और निर्देशक की भूमिका के कारण महत्वपूर्ण दीखता है तो आरम्भ में सिंहरण, चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य के बीच भावी यवन आक्रमण कारियों से भारत के नाश की चर्चा में चन्द्रगुप्त ही उससे उद्धार की शपथ लेता है इसीलिए फल का उपभोक्ता के रूप में चन्द्रगुप्त को ही नाटक के अंत में समस्त कार्य-व्यापारों को सफलता पूर्वक संपादन करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य यह कि नाटकोचित पात्रों के विकास में उपर्युक्त तीनों पात्रों के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने समान रूप से क्रियाशीलता दिखलाकर जहाँ कभी-कभी द्वन्द्व भी प्रधान हो जाता है अन्ततः पूर्ण सफलता पायी है वहीं विडम्बना भी बनी रह जाती है कि नाटक का नायक कौन? नाटक स्त्री पात्रों की संख्या भी आठ है इनमें भी किसकी भूमिका सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होती है कहा नहीं जा सकता इसके भी कारण हैं: क्योंकि नाटककार ने नाटकीयता की दृष्टि से अलका की ही तरह अन्य स्त्री पात्रों जैसे सुवासिनी, कल्याणी, मालविका, कार्नेलिया, का भी विकास उसी तरह किया है जैसे पुरुष पात्रों में ऊपर दिखाया गया है। इसके अलावे अन्य पुरुष-पात्र और नारी-पात्र भी हैं जिनकी महत्वपूर्ण भूमिका है इनपर विचार अगली कक्षा में की जायेगी।

मेधा शर्मा